बार्हस्पत्यो भरद्वाजः।अश्विनौ। त्रिष्टुप्।

स्तुषे नरा दिवो अस्य प्रसन्ताश्विना हुवे जरमाणो अर्कैः।
या सद्य उस्रा व्युषि ज्मो अन्तान्युयूषतः पर्युरू वरांसि॥ ६.०६२.०१

दिवो नरा- दिव्यौ। अस्य- एतस्य जगतः। प्रसन्ता- ईश्वरौ। अश्विना- अश्विनौ प्राणेशनशक्तिभूतौ। अर्कैः- मन्त्रैः। जरमाणः- स्तुवन्। हुवे- आह्वये। स्तुषे- स्तोतुम्। या- यौ। सद्यः- क्षणेन। उस्रा- शत्रुनिवारकौ। व्युषि- निशायां व्युष्टायाम्। ज्मः- भूम्याः। अन्तान्। उरू- महान्ति। वरांसि- आवारकानि तमांसि। युयूषतः- पृथक्कुरुतः॥१॥

ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः।
पुरू वरांस्यमिता मिमानापो धन्वान्यति याथो अज्रान्॥ ६.०६२.०२

ता- तौ। यज्ञम्- सङ्गतिकरणं दानं वा। शुचिभिः- पवित्रभावनाभिः। चक्रमाणा- कुर्वन्तौ। रथस्य- स्ववाहनस्य। भानुम्- प्रकाशम्। रजोभिः- तेजोभिः। रुरुचूः- रोचयेते। पूरू- बहूनि। वरांसि- तेजांसि। अमिता- अमितानि। मिमाना- निर्मिमाणौ। अपः- मूलशक्तिधाराः। धन्वानि- शुष्कभूमिकाश्च। अज्रान्- प्राणतुरगान्। अति याथः- अतिगमयथः॥२॥

ता ह त्यद्वर्तिर्यदरध्रमुग्रेत्था धिय ऊहथुः शश्वदश्वैः।
मनोजवेभिरिषिरैः शयध्यै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य॥ ६.०६२.०३

ता- तौ। उग्रा- तीक्ष्णौ। यत्। वर्तिः- गृहम्। अरध्रम्- असमृद्धम्। त्यत्- तत्। समर्धयितुम्। शश्वत्- सर्वदा। इत्था- एव। अश्वैः- प्राणतुरगैः। धियः। ऊहथुः- धारयथः। मनोजवैः- मनोवेगैः। इषिरैः- सदेषणैः। दाशुषः- दातुः। मर्त्यस्य- यजमानस्य। व्यथिः- व्यथाजनकचित्तवृत्तिः। परि शयध्यै- परिशयनाय। भवतु॥३॥

ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मोप भूषतो युयुजानसप्ती।

शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत्प्रत्नो अध्रुग्युवाना॥ ६.०६२.०४

ता- तौ। नव्यसः- अभिनवस्य। जरमाणस्य- स्तोतुः। मन्म- ध्यानम्। युयुजानसप्ती- युज्यमानप्राणतुरगौ। उप भूषतः- मण्डयतः। शुभम्- भद्रम्। पृक्षम्- अन्नम्। इषम्- काम्यम्। ऊर्जं- शक्तिम्। वहन्ता- वहन्तौ। युवाना- तरुणौ। अध्रुक्- अद्रोहः। प्रत्नः- पुराणः। यक्षत्- यजतु ॥४॥

ता वल्गू दस्रा पुरुशाकतमा प्रत्ना नव्यसा वचसा विवासे।

या शंसते स्तुवते शम्भविष्ठा बभूवतुर्गृणते चित्रराती॥ ६.०६२.०५

या- यौ। शंसते- स्तुवते। शम्भविष्ठा- अतिशयेन शङ्करौ। बभूवतुः- अभवताम्। गृणते- स्तुवते। चित्रराती- नानादानौ। तौ। वल्गू- सुन्दरौ। दस्रा- दर्शनीयौ। पुरुशाकतमा- अतिशयेन बहुकर्माणौ। प्रत्ना- पुराणौ। नव्यसा वचसा- अगतरसमन्त्रेण। विवासे- परिचरामि ॥५॥

ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समुद्रात्तुग्रस्य सूनुमूहथू रजोभिः।

अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात्॥ ६.०६२.०६

ता- तौ। तुग्रस्य सूनुं भुज्युम्- आत्मसूर्यस्य चिद्रश्मिभावुकम्। तुग्रशब्दो रश्मिनामसु पठितः। अरेणुभिः- रेणुरहितैः। रजोभिः- अन्तरिक्षमार्गैः। योजनेभिः- युक्तैः। विभिः- प्राणाश्वैः। पतत्रिभिः- पतनशीलैः। समुद्रात्- चित्तसमुद्रात्। संसारसमुद्रात्। अद्भ्यः- मूलशक्तिधाराभ्यः। अर्णस उपस्थात्। निः ऊहथुः- निरगमयताम्। भुज्युमंहसः पिपृथो निरश्विनेति श्रुतिरत्रानुसन्धेया। ॥६॥

वि जयुषा रथ्या यातमद्रिं श्रुतं हवं वृषणा वध्रिमत्याः।

दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गामिति च्यवाना सुमतिं भुरण्यू॥ ६.०६२.०७

वृषणा- वर्षकौ। दशस्यन्ता- यच्छन्तौ। सुमतिम्- शोभनमतिम्। च्यवाना- गच्छन्तौ। भुरण्यू- भर्तारौ। वध्रिमत्याः- चित्तस्य देशबन्धनयुक्तायाः। त्वं विश्वस्य जगत इति मन्त्रे वध्रिशब्दस्य पाशार्थं उच्यते सायणेन। बध्यते अनेनेति वध्रिः। हवम्- आह्वानम्। श्रुतम्- श्रुतिमयम्। अद्रिम्- स्थैर्योपलक्षणाभिषवणपाषाणं प्रति। जयुषा- जयशीलेन। रथ्या- रथेन। वि- विशेषेण। यातम्- आगच्छतम्। शयवे- स्तोत्रे। गाम्। पिप्यथुः- आप्याययतम्॥७॥

यद्रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा।
तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुरघं दधात॥ ६.०६२.०८

रोदसी- हे द्यावापृथिव्यौ। आदित्याः- अखण्डप्रकृतिजाः। वसवः- शरण्याः। रुद्रियासः- वेगाधिदेवताः। यत्। प्रदिवः- दिव्यम्। तपुः- तापकम्। अघम्- आहन्ता। देवानाम्। मर्त्यत्रा- मर्त्येषु। हेळः- क्रोधः। भूम- महान्। अस्ति- भवति। तत्। रक्षोयुजे- रक्षःप्रेरकाय। दधात- धारयत॥८॥

य ईं राजानावृतुथा विदधद्रजसो मित्रो वरुणश्चिकेतत्।
गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद्वचस आनवाय॥ ६.०६२.०९

यः। रजसः- लोकस्य। राजानौ- स्वामिनौ। ऋतुथा- कालेन। विदधत्- परिचरति। तम्। मित्रः- स्नेहाधिदेवता। वरुणः- ऋताधिदेवता च। चिकेतत्- जानीयात्। गम्भीराय। रक्षसे। हेतिम्- प्रहरणम्। अस्य- क्षिप। द्रोघाय आनवाय वचसे- द्रोहवचसे मनुष्याय क्षिप॥९॥

अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय वर्तिर्द्युमता यातं नृवता रथेन।
सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम्॥ ६.०६२.१०

अन्तरैः- अनिकृष्टैः। चक्रैः। द्युमता- दीप्तिमता। नृवता- प्राणाश्वयुक्तेन। रथेन- लक्ष्यप्रापकरंहणप्रतीकेन स्ववाहनेन। रथी ऋतस्य नो भवेति श्रुतेः ऋतं रथः। तनयाय- धर्मसन्तत्यै। वर्तिः- अस्मद्गृहम्। यातम्- आगच्छतम्। सनुत्येन- अन्तर्हितेन। त्यजसा-

क्रोधेन। मर्त्यस्य- मनुष्यस्य। वनुष्यताम्- बाधताम्। शीर्षा- शिरांसि। अपि। ववृक्तम्- छिनतम् ॥१० ॥

आ परमाभिरुत मध्यमाभिर्नियुद्भिर्यातमवमाभिरर्वाक्।
दृळ्हस्य चिद्गोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्तं गृणते चित्रराती॥ ६.०६२.११

गृणते- स्तुवते। चित्रराती- चित्रदानौ। परमाभिः- श्रेष्ठाभिः। मध्यमाभिः। अवमाभिः- अधमाभिः। नियुद्भिः- प्राणवडवाभिः। अर्वाक्- अस्मदभिमुखौ। आयातम्- आगच्छतम्। दृळ्हस्य- दृढस्य। गोमतो व्रजस्य- चिद्रश्मिसमूहस्य धेनुसमूहस्य वा। दुरः- द्वाराणि। वि वर्तं- विवृणुतम् ॥११ ॥